4

एली

शैतान के पुत्रों के साथ परमेश्वर का जन
(2:12-4:22)

2:12-4:22 में इस्राएल में पाए जाने वाले एक बहुत बड़े कलंक का पता चलता है। देश में अगुआई देने वाला कोई नहीं था; हर क्षेत्र में अगुआई न के बराबर थी; और हर कोई अपने ही मन से चलता था। याजकों को चाहिए था कि वे अगुआई देते, परन्तु बाइबल में हम देखते हैं कि वे भी भ्रष्ट हो चुके थे। हन्ना द्वारा नन्हें शमूएल को अर्पित करने की करुणामयी कहानी के बीच ही एक धुंधला सा संकेत मिलता है, ''एली के पुत्र तो लुच्चे थे; उन्होंने यहोवा को न पहचाना'' (2:12)। इस प्रकार सब कुछ सही नहीं था। समस्या का मूल कारण एली और उसके दो लड़कों पर केन्द्रित था।

एली शीलो में महायाजक था। वह हारून के सबसे छोटे बेटे ईतामार का वंशज था। अड़तालीस वर्ष की आयु में वह इस्राएल का न्यायी बन गया था और चालीस वर्ष तक न्यायी रहा था (4:18)। पहली बार अपने नाम का उल्लेख आने के समय उसकी उम्र 70 वर्ष के करीब होगी। बुढ़ापे में उसके दो बेटे हुए थे जिस कारण उन्हें कुछ ज्यादा ही लाड़-प्यार मिला था। जैसा कि ऐसे बच्चों के साथ अज़्सर होता है। वह हन्ना को डांटने में जितना उतावला और कठोर था, अपने बेटों को डांटने में उतना ही धीमा तथा नम्र था।

हर जगह एली का परिचय परमेश्वर की अधीनगी को मानने वाले एक भज़्त तथा सज़्माननीय व्यज़्ति के रूप में ही मिलता है। उसके मन में वाचा के संदूक के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। उसके जीवन में केवल एक ही कमी थी कि वह अपने लड़कों के प्रति लापरवाह रहा।

इस पाठ में शैतान बच्चों द्वारा परमेश्वर को समर्पित माता-पिता को पहुंचाई जाने वाली पीड़ा को दिखाया गया है। बहुत से भले माता-पिता ऐसे हैं जिन्हें किसी बच्चे के पाप के कारण शर्मिंदा होना पड़ता है, कइयों को तो जान से भी हाथ धोना पड़ता है। एली के बच्चे भी ऐसे ही थे।

सीमाएं होनी चाहिए थीं

एली पिता का फर्ज पूरा नहीं कर पाया था! बिना किसी संदेह के एली बच्चों की ज़िद पूरी करने वाला पिता था। जब कोई उसे उसके लड़कों के पापों के बारे में बताता, तो वह उसकी बात पर ध्यान नहीं देता था। वह अपने बेटों को डांटता तो होगा, मगर सज़्ती से नहीं। एक न्यायी तथा महायाजक के रूप में उसका कर्ज़व्य बहुत स्पष्ट था। उन्हें तुरन्त पद

से हटाकर मार डालना चाहिए था (लैव्यव्यवस्था 18:6, 20, 29; 20:10; 21:6, 7, 17, 23)। एली को मालूम था कि उसके लड़कों के पाप गुप्त थे (2:22), परन्तु वह उन्हें बुरा भला कहकर ही संतुष्ट हो जाता था। उसने न्याय करने के लिए अपनी शक्ति का इस्तेमाल नहीं किया था। किसी ने कहा है कि लोगों के प्रति अपने पुत्रों द्वारा किए जा रहे अन्याय के बारे में वह चुप था, जबकि परमेश्वर के प्रति वह बहुत ही भद्र था!

कई बच्चे ज्यादा अनुशासन के कारण बिगड़ जाते हैं (कुलुस्सियों 3:21), जबकि बहुत से बच्चे अनुशासन न होने के कारण ही बिगड़ते हैं। माता-पिता को चाहिए कि ज़िद पूरी करने के इन दोनों क्षेत्रों में सावधानी बरतें। इसमें एक अनुशासन में छूट देना है (3:13; 2:25)। ''रोकना'' शब्द से निर्बल होने, विनम्र होने, या शक्तिहीन होने का पता चलता है। एली को कठोर कदम उठाकर अपने लड़कों को अनुशासन में रखना चाहिए था। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। दूसरा माता-पिता की अगुआई में छूट या अनुमति देना है (2:12, 17)। माता-पिता की आज्ञा के बिना फैसले लेकर बड़े होने वाले बच्चे गैरजिम्मेदार नागरिक ही बनेंगे।

कुछ मामलों में माता-पिता के प्रश्नों ''हमसे कहां गलती हुई?'' का उज़र नहीं दिया जा सकता। परन्तु एली के मामले में दिया जा सकता है। ज़िद पूरी करना उसके बच्चों (4:11), उसके (4:18) और दूसरों (4:22) के लिए खतरनाक सिद्ध हुआ।

खुली छूट देकर पालन-पोषण करना अंत में आश्चर्यजनक विषमताओं को ही जन्म देता है। इस मामले में एली के परिवार को देखें। मन्दिर के व्यवहार में एक अविश्वसनीय भिन्नता थी (1:14; 2:13, 14)। परमेश्वर ने बलिदानों के भाग के साथ याजक उपलब्ध कराए थे (व्यवस्थाविवरण 12:18)। एली के पुत्र लालची थे तथा और अधिक की इच्छा रखते थे। वे आराधना करने वालों के लिए रखा गया खाना तक खा लेते थे (लैव्यव्यवस्था 8:31; 2 इतिहास 35:13)। लोगों को लूटने से संतुष्ट न होकर वे परमेश्वर को भी लूटने लग गए थे। वेदी पर परमेश्वर के लिए चढ़ाई जाने वाली चर्बी जलानी होती थी (लैव्यव्यवस्था 3:5-17; 7:31, 34), लेकिन उसके पुत्र चर्बी जलाने से मना कर देते थे (2:17)। ये काम परमेश्वर की निंदा करने के बराबर थे, परन्तु उन्होंने छोड़े नहीं थे। वे मन्दिर में काम करने वाली स्त्रियों के साथ कुकर्म करते थे (2:22)। एली अलग प्रकार का आदमी था! वह भक्तिपूर्ण समर्पण की मूरत था।

संदूक के बारे में भी उनके विचारों में भिन्नता थी (4:3, 4; 4:13, 18क)। एली के पुत्र संदूक को अंधविश्वास मानते थे। उनकी नज़र में धर्म केवल आडम्बर और संदूक रहस्यमयी तथा जादू भरा था। एली की नज़र में संदूक पवित्र भय में रखा गया था। वह इसे युद्ध के मैदान में नहीं ले जाने देना चाहता था, परन्तु सफलतापूर्वक विरोध वह बहुत कम कर पाया था। संदूक के बारे में उनमें से हर एक के विचार से यहोवा के बारे में उसकी अवधारणा का पता चलता था।

उनमें अपने साथ काम करने वाले के साथ व्यवहार करने के ढंग में भी अंतर था। पुत्र स्वार्थ से चलते थे। दूसरों को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करने से पुत्रों की अपवित्रता,

लालच, और अशुद्धता भरे आचरण का पता चलता था। एली को दूसरों से सहानुभूति रखने वाले के रूप में माना जाता था (1:7) जो दूसरों के जीवन में भला देखने का इच्छुक था (2:20)।

उनमें से हर एक की परमेश्वर को समझने की बात भी अलग थी। एली के पुत्र आत्मिक तौर पर ही नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से नास्तिक थे (2:12)। उनका परमेश्वर से कोई सज़्बन्ध नहीं था, उसके साथ उनकी कोई सहानुभूति नहीं थी और न उसके प्रति कोई जिज़्मेदारी की भावना (2:12)। लेकिन एली उनसे हटकर था! (3:18; 4:13)।

इतनी भिन्नताएं इसलिए थीं ज़्योंकि एली अपने पुत्रों को शिक्षित करने तथा उनमें परमेश्वर के अधिकार के लिए सज़्मान की भावना पैदा करने में नाकाम रहा था। अनुशासनहीन पालन-पोषण का अंत ऐसा ही दुखदायी होता है।

बिना रोक-टोक के पालन-पोषण के भयंकर नतीजे होते हैं। पहला, परिवार का प्रभाव जाता रहा (2:22-24)। पाप केवल पापी के साथ ही खत्म नहीं हो जाता। हर मनुष्य किसी न किसी रूप में दूसरे से भी जुड़ा हुआ है अर्थात हर कोई दूसरे को प्रभावित करता है। एली के परिवार का सज़्मान सदा के लिए खत्म हो गया था! परिवार में ही झगड़े बढ़ गए थे (2:25)। अपने लड़कों के खतरनाक रास्ते पर चलने को एली ने देखा, तो उसने उन्हें सुधारने की कोशिश की, परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी, ज़्योंकि लड़के बुराई में जड़ पकड़ चुके थे और उन्होंने बदलने से इन्कार कर दिया था। परिवार में ही विद्रोह हो गया। परमेश्वर के प्रति परिवार का समर्पण कम हो गया (2:29)। यकीन नहीं आता कि 2:29 के शज़्द एली के लिए कहे गए होंगे। परमेश्वर ने एली पर अपने बलिदान ''रौंदने'' का आरोप लगाया था। ''रौंदना'' शज़्द बिगड़े हुए बैल के लिए इस्तेमाल किया गया है जो खूंखार होकर जुए को उतारने की कोशिश करता है। एली पर यह आरोप था कि वह परमेश्वर की आज्ञाओं में बंधा नहीं रहना चाहता था! एली ने परमेश्वर के साथ बंधने के बजाय अपने पुत्रों के साथ बंधना पसन्द किया था। एली पर परमेश्वर के बजाय अपने पुत्रों को ''आदर देने'' का आरोप भी लगा था। यह परिणाम आम बात थी। माता-पिता अपनी गलती मानकर जिज़्मेदारी अपने ऊपर लेने के बजाय परमेश्वर पर, कलीसिया पर या प्रचारक पर आरोप लगाना आसान समझते हैं।

दूसरा, परिवार की विरासत को धज़्का लगा (2:33; 4:13-17)। एली और उसके पुत्रों ने अपने आप को अयोग्य सिद्ध करके याजकाई गंवा दी थी। उनके नाम किसी वंशावली में नहीं मिलते! उनकी पहचान को संदूक के खोने तथा शीलो में मन्दिर के गिरने के साथ जोड़ा जाता है। परिवार के पाप के कारण, परमेश्वर ने इस परिवार की सामर्थ को तोड़ने की प्रतिज्ञा की (2:31)। यह प्रतिज्ञा युद्ध के मैदान में (4:11); शीलो के गिरने से (भ.सं. 78:60 से); और अंत में नोब में (22:18) पूरी हुई।

हमने एली की दर्दनाक कहानी में देखा है कि कैसे कोई परमेश्वर का जन होने के बावजूद ''शैतान के पुत्रों'' का पालन-पोषण कर रहा हो सकता है। संदूक के छिन जाने के दिन ही एली और उसके पुत्र मर गए थे। उस शोकपूर्ण दिन में एली के घर एक बच्चे का

जन्म हुआ और उसका नाम ''महिमा उठ गई'' रखा गया था (4:21)। एली के परिवार के अंत के लिए यही नाम उपयुज़्त है। ज़्योंकि महिमा बिगड़े और सिर चढ़े बच्चों को जो दी गई थी!

सीखे गए सबक

पहले, एली की असफलता से पता चलता है कि अपने बच्चों का पालन-पोषण करते समय माता-पिता को *ज़्या नहीं* करना *चाहिए:* परमेश्वर की आज्ञाओं को महत्वहीन न समझें (2:27-29क)। अपने बच्चों की गलतियों पर पर्दा डालते हुए उन्हें परमेश्वर से बढ़कर सज़्मान न दें (2:29ख)। बच्चे के पाप में उसका साथ न दें (2:29ग)। माता-पिता अपने दायित्वों को असावधानी से न लें, ज़्योंकि जो कुछ आप बच्चे के साथ करते हैं, उसका दूसरों पर नाटकीय असर होगा (2:30-36)।

दूसरा, एली की भयंकर भूल माता-पिता के लिए एल्काना और हन्ना के सिद्धांतों को मानने की आवश्यकता पर ज़ोर देती है: यह अहसास करें कि बच्चा परमेश्वर की ओर से एक दान है और उससे हमें बहुत बड़ी जिज़्मेदारी मिलती है। कोमल हृदयों में आत्मिक मूल्य डालने की आवश्यकता को महसूस करें। अपने बच्चे को परमेश्वर के लिए एक अद्‌भुत प्रभाव के रूप में तैयार करने के लक्ष्य की ओर बढ़ने की आवश्यकता को समझें। अपने बच्चे को ''उसके जीवन भर'' सुधारने की आवश्यकता समझें। यह बात अच्छी तरह समझ लें कि माता-पिता बच्चे को केवल वही सिखा सकते हैं जो वे खुद जानते हैं, वही व्यवहार सिखा सकते हैं जो वे स्वयं करते हैं और परमेश्वर का सज़्मान करना उतना ही सिखा सकते हैं जितना उनके अपने मन में उसका भय मानते हैं।

सारांश

माता-पिता बनना ''संवेदनशील'' कार्य है। इसके लिए बच्चों को ईश्वरीय मार्ग में शिक्षित करने के लिए ऐसी बुद्धि की आवश्यकता है जो संसार की नहीं है। ऐसा नहीं कि माता-पिता से गलती नहीं होगी, परन्तु परमेश्वर का भय रखने वाले और अपने बच्चों में परमेश्वर के प्रति श्रद्धा बढ़ाने वाले माता-पिता बहुत कम गलतियां करेंगे!

एली यह नहीं समझ पाया कि बच्चों के रोने और बिनतियों के आगे ''दब जाना'' आसान ढंग नहीं है। वह दुखी होकर मरा ज़्योंकि उसने अपने बच्चों को परमेश्वर के अधिकार के जुए के लिए तैयार नहीं किया था! (3:13)।